RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्दी उपन्यास में पद्य : प्रयोग और सार्थकता

Magan Parmar

Reseach Fellow, Hindi Department, Gujarat University, Ahmedabad, Gujarat (India)

उपन्यास एक गद्य-विधा है। कहानी, नाटक, आत्मकथा आदि भी गद्य-विधाएँ हैं। गद्य की इन सभी विधाओं का अपना अनोखा रुप हैं, अलग-अलग लाक्षणिकताएँ हैं। यही लाक्षणिकताएँ और स्वरुप गद्य की इन विधाओं को एक-दूसरे से भिन्न करती हैं। कभी कभी इन विधाओं का एक-दूसरे में थोड़ा-बहुत मेलजोल भी हो जाता हैं। ज्यादातर ऐसा उपन्यासों के बारे में होता हैं। इसीलिए उपन्यास को एक 'बहुआयामी विधा' माना जाता है।

उपन्यास आधुनिक हिन्दी गद्य का एक लोकप्रिय साहित्य-प्रकार है। आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य में उपन्यास का विकास तेजी से हुआ है। उपन्यास के इस विकास में उसके ढ़ाँचे में भी थोड़ा-बहुत परिवर्तन पाया जाता है। इस कारण साहित्य की अन्य विधाओं के तत्व भी कहीं-कहीं उपन्यास में धूल-मिल गए हैं। ज्यादातर गद्य की अन्य विधाओं के तत्व उपन्यास में पाये जाते हैं। हिन्दी उपन्यास के प्रचलित ढ़ाँचें में कहीं पर कहानियाँ पायी जाती हैं, कहीं पर नाट्यात्मकता होती है, कहीं पर जीवनी होती है तो कहीं कहीं आत्मकथात्मकता भी पायी जाती है। जैसे 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'शेखर : एक जीवनी', 'मुझे चाँद चाहिए' आदि। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में उपन्यास के ढ़ाँचे में कहानियाँ हैं, जो उपन्यास के नायक माणिक मुल्ला ने लेखक और उनके मित्रों को सुनाई थीं। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में उपन्यास के नायक बाणभट्ट खुद अपनी कथा बता रहे है तो 'शेखर : एक जीवनी' का शेखर जेल में बैठा हुआ खुद अपनी जीवनी लिख रहा है। 'मुझे चाँद चाहिए' में उसके रचनाकार श्री सुरेन्द्र वर्मा की नाट्यकला निखर आई है।

कुछेक उपन्यासों में गद्य की अन्य विधाओं के अलावा पद्य के अंश भी पाये जाते हैं। हालांकि उपन्यासों में पद्य के अंश उस मात्रा में नहीं होते हैं जिस मात्रा में गद्य की अन्य विधाओं की लाक्षणिकताएँ। फर्क यह रहता है कि उपन्यास में पद्य के अंश छूट-पूट मात्रा में पाये जाते है जबकि अन्य विधाओं की लाक्षणिकताओं का मेलजोल ज्यादा मात्रा में या कहीं कहीं आद्यंत भी छाया हुआ होता हैं।

जीवनी के ढ़ाँचे में आत्मकथात्मक उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' में पद्यात्मकता का पुट पाया जाता है, जिसमें अंग्रेजी की कविताओं का प्राधान्य हैं। शेखर टेनिसन, रोजेटी, स्विनबर्न आदि के काव्यों में रुचि रखता हैं और उसका पठन करता हैं। जैसे रोजेटी की ये पंक्तियाँ -

"Beneath the glowing throat the breasts half-globed
Like folded lilies deep-set in stream"[1]

उपन्यास के अंत में शशि के अक्षरों में नक़ल की हुई यह कविता -

"I want to die while you love me
While yet you hold me fair,
While laughter lies upon my lips
And lights are in my hair
"I want to die while you love me
Oh who would care to live
Till love has nothing more to ask
And nothing more...to give?
I want to die —"[2]

शशि के प्रेम की संवेदना को व्यक्त करने के लिए शायद गद्य की भाषा ही क्यों इससे बेहतर कोई कविता भी नहीं हो सकती थी।

ग्राम्य संस्कृति के गद्यात्मक महाकाव्य 'मैला आँचल' में स्थान-स्थान पर पंक्तियाँ, स्थानीय गीत, प्रातकी, दोहे आदि दिखाई पड़ते हैं। यथा -

- "नयना मिलानी करी ले रे सैयाँ, नयना मिलानी करी ले !
  अबकी बेर हम नैहर रहबौ, जे दिल चाहय से करी ले !"[3]
- "ज्वाला बिरह वियोग की, रही कलेजे छा-य ।
  प्रेमी मन मानै नहीं, दरसन से अकुला-य ।"[4]
- "अरे देसवा के सब धन-धान विदेसवा में जाए रहे।
  मँहगी पड़त हर साल कृसक अकुलाय रहे।"[5]
- "धरती फाटे मेघ जल
  कपड़ा फाटे डोर ।
  तन फाटे की औखदी
  मन फाटे नहीं ठौर !"[6]

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

मेरीगंज गाँव की आँचलिकता को उसकी समग्रता में प्रकट करने के लिए वहाँ के स्थानीय गीत, प्रातकी, दोहे आदि का प्रयोग अनिवार्य था। साथ ही इसमें स्वाधीनता की भावना की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है।

सांप्रदायिक तनाव के माहौल की दुखद विभीषिका को प्रकट करने वाले उपन्यास 'तमस' में पद्यात्मकता बड़े अनुपात में पायी जाती है। 'तमस' में सांप्रदायिक तनाव के माहौल को सशक्त रुप में उजागर करने के लिए उसके अनुरुप पद्य की योजना की गई है। इस उपन्यास में कहीं गीत, कहीं शेअर तो कहीं मंत्रों का प्रयोग किया गया है। यथा-

प्रभातफेरी के सापेक्ष में पढ़ा गया शेअर-

"मुल्ला मियाँ मिशालची, तीनों एक समानः
लोकाँ नूँ दस्सण चाणना, आप हनौ जाण ।"(7)

प्रभातफेरी का गीत-

"जरा वी लगन आज़ादी दी
लग गई जिन्हाँ दे मन दे विच ।"(8)
"ओह मजनूँ बण फिरदे ने
हर सेहरा हर बन दे विच ।"(9)

प्रार्थना गीत- "सब पर दया करो भगवान
सब पर कृपा करो भगवान..."(10)

सासाहिक सत्संग का प्रवचन-

"फैलाये घोर पाप यहाँ मुसलमीन ने
नेअमत फ़लक ने छीन ली, दौलत ज़मीन ने ।"(11)

जिला काँग्रेस-कमेटी की तरफ से मुनादी-

"वतन का फ़िक्र कर ज्यादा मुसीबत आनेवाली है ।
तेरी बरबादियों के तजकरे हैं आसमानों में ।।"(12)

उपनिषद और गीता के मंत्र-

उपनिषद का मंत्र-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु सा कश्चित दुःख भाग भवेत् ।"(13)

(शान्तिपाठ मंत्र)- "ॐ द्यौ शान्ति पृथ्वी, शान्तिरापः
शान्तिरौषधयः, शान्ति वनस्पतिः"(14)

प्रभातफेरी का गीत, उसके सापेक्ष में पढ़ा गया शेअर, प्रार्थना गीत, सासाहिक सत्संग का प्रवचन, जिला काँग्रेस-कमेटी की तरफ से मुनादी, उपनिषद और गीता के मंत्र आदि सांप्रदायिक तनाव के माहौल को उसके यथार्थ रुप में प्रस्तुत करते हैं।

मन्नू भंड़ारी के 'आपका बंटी' में भी पद्य का छूट-पुट प्रयोग पाया जाता है, जिसका अप्रत्यक्ष संकेत अजय और शकुन के संबंध के तनाव के सापेक्ष में हैं। यथा-

"मेरे तो रिरधर गोपाल, दूसरा न कोइ..."(15)
"हरे कृष्ण। हरे कृष्ण। कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे"(16)

सारांशतः उपन्यास एक बहुआयामी विधा है। उसमें गद्य के अन्य स्वरुपों का समावेश भी थोड़ी बहुत मात्रा में पाया जाता हैं। हिन्दी के कुछेक उपन्यासों में विषय-वस्तु की आवश्यकतानुसार पद्य का भी प्रयोग हुआ हैं। यह पद्य कहीं पर अन्य पद्य के अंश के रुप में है तो कहीं पर स्वतंत्र रचना के रुप में भी हैं। उपन्यास में प्रयुक्त पद्य सार्थक रहा है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

1. शेखर : एक जीवनी-1, राजकमल पेपरबैक्स, पहला संस्करण-2015, पृष्ठ-154
2. शेखर : एक जीवनी-2, राजकमल पेपरबैक्स, पहला संस्करण-2015, पृष्ठ-246
3. मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, 38वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-137
4. मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, 38वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-285
5. मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, 38वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-143
6. मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, 38वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-332
7. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-18
8. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-29
9. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-29
10. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-70

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

11. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-71
12. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-116
13. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-70
14. तमस, राजकमल पेपरबैक्स, 32वाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-70
15. आपका बंटी, राजकमल पेपरबैक्स, नौवाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-21
16. आपका बंटी, राजकमल पेपरबैक्स, नौवाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-206

© RRIJM 2015, All Rights Reserved